अंग बना दिया। स्वाधीनता का संग्राम अब समाज के संभ्रांत, अतिशिक्षित समुदाय का मामला नहीं रह गया। निहत्था, निरक्षर, निरीह से निरीह साधारण भारतीय जन अब उसकी धुरी बन गया। इसने पूरे देश में जबर्दस्त उत्साह की लहर पैदा की। इसके समानांतर साम्यवादी आदर्शों से सुधारवाद से असंतुष्ट और क्रांति में विश्वास रखने वाले विचार भी तेज़ी से लोकप्रिय हो रहे थे। हिंदी साहित्य और हिंदी कविता पर इसका प्रभाव पड़ना अनिवार्य था। द्विवेदी युग के बाद छायावाद ने इस नए स्वतंत्र मनुष्य के व्यक्तित्व को पहचाना। लेकिन उस जमाने की बेचैनी, छटपटाहट की उग्रता को अभिव्यक्त किया स्वच्छंद राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के कवियों ने, जिनमें माखनलाल चतुर्वेदी अग्रणीय थे। इनका असर लेकर छायावाद के परवर्ती काल में उत्तर छायावादी या छायावादोत्तरी प्रवृत्ति के कुछ सशक्त कवि उभरे, जिनमें बच्चन, भगवती चरण वर्मा और दिनकर प्रमुख हैं। मस्ती, फक्कड़पन, बेपरवाही इनके लक्षण थे। पर दिनकर के स्वर की विशिष्टता को अलग से लक्ष्य किया गया। उनकी कविताओं में मस्ती तो थी, पर साथ ही एक गंभीर समाजोन्मुखता थी, क्रांति का आह्वान था, शोषण और अत्याचार पर टिकी समाज-व्यवस्था का विरोध था। प्रखर राष्ट्रवादी तेवर के कारण दिनकर जी युवकों में खासे लोकप्रिय हुए। पर उनकी राष्ट्रवादिता में धर्म की मिलावट नहीं है। वह भारतीय संस्कृति की सामासिकता को महत्व देती है। उनका राष्ट्रवाद अंधराष्ट्रवाद भी नहीं है। उसमें दूसरों को दलित करके खुद को प्रतिष्ठित करने की चाह नहीं है। उनकी आक्रामक राष्ट्रीयता भारत पर हुए चीनी हमले के दौरान उभरी। 'कुरुक्षेत्र' में उग्र चोट खाए हुए राष्ट्र के क्रोध का विकट स्वर सुनाई पड़ता है। लेकिन राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान सामाजिक बनावट, जाति व्यवस्था आदि को लेकर जो मंथन चल रहा था, उस 'रश्मिरथी' का नायक कर्ण है और उसकी केंद्रीय समस्या यह है कि कुमारी माता के गर्भ से उत्पन्न संतान को समाज में गुण के अनुसार स्थान मिलना चाहिए या नहीं। दिनकर जी राष्ट्रवादी स्वर की कविताओं के साथ भिन्न प्रकार की कविताएँ भी लिख रहे थे। 'रसवंती और 'द्वंद्वगीत' में इस प्रकार की कविताएँ सम्मिलित हैं। प्रेम और श्रृंगार के प्रति आकर्षण उनमें शुरू से ही देखा जा सकता है। लेकिन उनके उच्च, धनगर्जन-भरे राष्ट्रवादी स्वर के नीचे यह दब सा जाता रहा है। प्रेम, सौंदर्य और श्रृंगार के प्रति आकर्षण का परिपाक आगे चलकर उनके प्रसिद्ध काव्य 'उर्वशी' में दिखलाई पड़ता है। लेकिन यह एक पुरुषकवि द्वारा नारी को मात्र भोग्य या श्रृंगार की सामग्री समझकर नहीं लिखा गया। इसमें आध्यात्मिकता का भी स्पर्श है, प्रेम भावना और सहज काम-वासना के बीच भी द्वंद्व चलता है। क्या काम से मनुष्य को मुक्ति मिलती है? ऐसे प्रश्न दिनकर जी की इस प्रकार की कविताओं में उठाए गए हैं।

आरंभ से ही दिनकर जी की कविताओं को बहिर्मुखी स्वभाव का माना गया। पर स्वंय उन पर बदलती हुई साहित्यिक विचारधाराओं का प्रभाव पड़ रहा था। 1943 के आसपास वे टी.एस. इलियट की कविताओं के संपर्क में आए। इन कविताओं ने उन पर गहरा असर डाला। द्विवेदीयुगीन और छायावादी काव्य-संस्कारों से निकलकर वे औद्योगिक, आधुनिक सभ्यता की खंडित मानवीय चेतना के द्वंद्व से परिचित हुए। आगे चलकर इस प्रभाव ने उनकी काव्य-रचना पर असर डाला। पर उनका स्वर प्रमुखतः वही रहा जो पहले था। पर जैसे-जैसे समय बीतता गया, उनके स्वर में पाई जाने वाली निश्चयात्मकता कम होती गई और वे मानवीय स्वभाव की जटिलता को समझने और उसे अभिव्यक्त करने में लगे। देशभक्ति और राष्ट्रवाद के उद्घोष के बीच उनकी अपनी वेदनाएँ दब सी गई थीं। पहले निराशा, असफलता को जैसे उनके यहाँ कोई जगह नहीं है। पर 'आत्मा की आँखे' और 'हारे को हरिनाम' में उनका यह निजी स्वर उभरता है। इनमें छंद भी टूटते हैं, गेयता भी पीछे चली जाती है।

दिनकर जी ने छायावादी संस्कारों के साथ लिखना शुरू किया था। उन्होंने स्वंय लिखा है कि छायावाद के रोष से बचना मुश्किल था। पर उनके काव्य-आदर्श हिंदी से बाहर के कवि थे - उर्दू के इक़बाल और बंगला के रवीन्द्रनाथ ठाकुर । इन दोनों ने दिनकर की काव्य-दृष्टि के निर्माण और विकास में गहरा योगदान किया। वैचारिक स्तर पर एक ओर वे कार्ल मार्क्स के साम्यवादी सिद्धांत से प्रभावित थे, वहीं दूसरी ओर महात्मा गांधी की करूणा से भरा हुआ मानवता वाद भी उन्हें आकर्षित करता था। इन प्रभावों के बीच उनका कवि व्यक्तित्व निर्मित हुआ। कविता में उन्होंने हमेंशा इसका ध्यान रखा कि पाठकों को परेशानी न हो। इसलिए सुस्पष्टता को कविद्रा के सबसे बड़े कलात्मक गुणों के रूप में देखा। छंदो का विरोध उनके समक्ष आरंभ हो गया था। निराला ने इसमें उदाहरण उपस्थित किया था। पर दिनकर जी का लक्ष्य था पंत के सपने को मैथिलीशरण गुप्त की सफाई से लिखना। इसलिए मुक्त छंद के प्रभुत्व के बाद भी वे आसानी से लोगों की जुबान पर चढ़ने वाली, गेयता के गुणों से युक्त कविता लिखते रहे। सुस्पष्टता के प्रति आग्रह अंत तक बना रहा।

लेकिन 1943 के आस-पास टी.एस. इलियट को पढ़ने के बाद और हिंदी में प्रयोगवादी काव्य आंदोलन को समीप से देखने पर उन्होंने अपनी कविता संबंधी धारणाओं में और परिवर्तन किया। प्रौढ़ कविता का लक्षण उनके अनुसार यह होगा कि वह संगीत से बिलकुल स्वतंत्र होगी। गेयता उसकी पूर्व शर्त न होगी। वे प्रयोगवादी ढंग की कविताएँ तो नहीं लिख रहे थे, लेकिन कविता में सब कुछ साफ-साफ आए -- इस पर उनका आग्रह पहले जैसा नहीं रह गया था।

13.7 प्रश्न

1. राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति दिनकर के काव्य में किस रूप में हुई है, विवेचन कीजिए।
2. दिनकर के काव्य में सौंदर्य और प्रेम का स्वर मुख्य स्वर रहा है, सोदाहरण विवेचन कीजिए।
3. उत्तर छायावादी कवियों में दिनकर अपने युग के एक प्रतिनिधि कवि के रूप में उभरते है इस कथन के आधार पर दिनकर के काव्य की प्रमुख विशेषताओं को रेखांकित कीजिए!
4. दिनकर की काव्य कला संबंधी मान्यताओं को स्पष्ट कीजिए।

इस खंड की उपयोगी पुस्तकें

1. छायावाद का समाज शास्त्र, डॉ0 शशि मुदीराज, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1988।
1. महादेवी के काव्य में लालित्य योजना, डॉ0 राधिका सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्र.सं. 1979।
2. महादेवी के काव्य में लालित्य विधान, डॉ0 मनारेमा शर्मा, साहित्य संस्थान, कानपुर, प्र.सं. 1976।
3. महादेवी संस्मरण ग्रंथ, (संपा.) पंत तथा शांति जोशी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं. 1967।
4. महादेवी वर्मा, शचीरानी गुर्टू, आत्माराम एंड संस, दिल्ली, प्र.सं. 1970।
5. छायावाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि, डॉ0 सुषमा पाल।
6. आधुनिक हिंदी काव्य में प्रतीकवाद, मंगल प्रकाशन, जयपुर, प्र.सं. 1966।
7. छायावाद का सौंदर्य शास्त्रीय अध्ययन, डॉ0 विमल, राजकमल प्रकाशन, पटना, 1977।
8. छायावाद का काव्य शिल्प, प्रतिमा कृष्ण बल, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1971।
9. महादेवी की कविता में सौंदर्य भावना, डॉ0 सी. तुलसम्मा, सूर्य प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1984।
10. सुमित्रानंदन पंत : डॉ0 नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
11. सुमित्रानंदन पंत : जीवन और साहित्य (दो भाग) : शांति जोशी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
12. सुमित्रानंदन पंत : सं0 शची रानी गुर्टू
13. सुमित्रानंदन पंत : कवि और काव्य : शारदा लाल, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
14. युग-कवि पंत की काव्य-साधना : डॉ0 विनय कुमार
15. हिंदी साहित्य का इतिहास, लेखक - आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
16. हिंदी साहित्य का उद्‌भव और विकास, लेखक - पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी।
17. कवि-दृष्टि, लेखक - सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' ।
18. छायावाद, लेखक - डा0 नामवर सिंह
19. कविता के नये प्रतिमान, लेखक - डा0 नामवर सिंह
20. रूद्र-समग्र (संपादक - डा0 नंद किशोर नवल) की भूमिका
21. आधुनिक हिंदी कविता, लेखक - डा0 नंद किशोर नवल